15 भूल गया है क्यों इंसान

भूल गया है क्यों इंसान
सबकी है मिट्टी की काया,
सब पर नभ की निर्मल छाया,
यहाँ नहीं है कोई आया, ले विशेष वरदान
भूल गया है क्यों इंसान।

धरती ने मानव उपजाए,
मानव ने ही देश बनाए,
बहु देशों में बसी हुई है, एक धरा-संतान,
भूल गया है क्यों इंसान।

देश अलग हैं, देश अलग हों,
वेश अलग हैं, वेश अलग हों,
मानव का मानव से लेकिन, अलग न अंतर-प्राण,
भूल गया है क्यों इंसान।

– हरिवंशराय बच्चन

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED WEB COPY

शब्दार्थ :

काया – शरीर
बहु – अनेक
धरा– पृथ्वी
अंतर–प्राण – हृदय
समवेत – एक साथ मिलकर (समूह में)
निर्मल – स्वच्छ

प्रश्न–अभ्यास

पाठ से –

1. कविता का सारांश अपनी भाषा में लिखिए ।
2. इस कविता से आपको क्या प्रेरणा मिलती है ?
3. **निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए –**

(क) देश अलग हैं, देश अलग हों,
वेश अलग हैं, वेश अलग हों,
मानव का मानव से लेकिन, अलग न अंतर- प्राण।

(ख) सबकी है मिट्टी की काया,
सब पर नभ की निर्मल छाया,
यहाँ नहीं है कोई आया,ले विशेष वरदान।

पाठ से आगे –

1. मनुष्य किस प्रकार दूसरों को अपने से भिन्न समझते हैं?
2. अलग–अलग देश, अलग–अलग वेश के बावजूद भी हर मनुष्य एक जैसे हैं। कैसे?

कुछ करने को–

1. इस कविता को समवेत स्वर में अपनी कक्षा में सुनाइए ।

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED